

DPN 6258

Title : भैरवाग्नि होम सूत्र पद्धति BHAIKAVASNI HOMA SUTRA PADDHATI

Run. No. 6949

Cat. No. 57

Micro. No.

Subject ॐ वि - Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / नेपालभाषा निर्देश है
new direction.

Size in cms. 29 x 10.8

Folios 10

Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor भवानीशंकर / राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place Bhavani Shankar / Rajendra Shrestha

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : (प्याली) : मन्त्राङ्कुर

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Remark : Mantra monograms
included

Beginning, colophon, post-colophon :

अनमः श्री महाभैरवाय ॥ भैरवाग्नि यद्वा विधिं वक्ष्ये ॥ सूर्यार्चि ॥ पुष्पभाजने ॥ गृह नमस्कार ॥
... कृष्णं वा काश्यं वा देवास्मै वाय ॥

समाधि वाक्य / Colophon

कलकत्ता प्रजनं ॥ प्रामस वाय ॥ इति मौर्यादि हरेरु द्वात्र पद्यतिः समाप्तः ॥ ॥ भवानी
शङ्करे लिखत (लिखत ?) पुस्तकं लिखितं मुद्रा ॥ मौर्यादि नाम महा वर्ष २ २५ वेददंतिदि ॥

10

5

0

5

10

15

20

25

30

[illegible]

स्वारा ॥ ॥ यथू ॥ ॐ जूं गिवत स्वाय स्वाहा ॥ ॥ उर्द्ध्या निमाकृति ॥ वरुनादि ॥ ॐ जूं जूं जूं स्वर्द्ध
महा हे व वाय सर्वत स्वाय नमः ॥ राम सिद्धि ॥ ॥ अथ सिमत स्वात काय ॥ हिवर्थ लीगन ॥ ॐ जूं ५४
क्रायरु ॥ लखन राय ॥ मूल मनुज स्वय ॥ ॥ ॐ जूं कव वाय नमः ॥ अवगुल्ल ॥ ॐ जूं ५४ अक्रायरु
॥ धिय ॥ अथ कुद्या दग्निन ॥ सलिमिलास सिमत स्वात पातन ॥ ॐ जूं ५४ अक्राय कुद्या दग्निन ॥ ॐ
॥ मद्या कालिकास्य म्यलासुन ॥ एकाग्रकान मद्याथ सदायकाव सलिससतय ॥ ॐ कुद्या दग्निन स्वाहा
॥ धवत आरुति ॥ वलि ॥ ॐ जूं अथ सप्यनियरुता यरुता कुविर्हृतिना ॥ यरुता विचित्रकानि सन
गुक्ति गिवारुया ॥ ॐ ५४ अक्रायरु कुद्या दग्निन नमानमः ॥ कुद्या दग्निन विसर्जनी ॥ ॐ कुद्या दम
गिपुतिना मिदूर्वमं ॥ ॐ ५४ यमवायु गं विप्रवाह नमानमः ॥ ॐ नेर्मत्या म्यपद्याताय कुद्या दग्निनी

3

मां ७

गकिहकायतजविपतयकागसनाय। दउरुलुययताविपतयमहिषासनाय।

वज्रहस्तयस्त्रिभिषक्त्युत्तमवत्सनाय २॥ ध्वजहस्तयस्त्रिभिषक्त्युत्तमवत्सनाय ३॥

तद्गुरुस्तथा कृत्वा विधत्तं यथा समाप्तं । पादगुरुस्तथा कृत्वा विधत्तं यथा समाप्तं ।

१ दाहकायधनाधिपतयद्वयासनाय १

विश्वरूपायतर्वरुगाधिपतयद्वयासनाय १

वक्रावक्रसुतद्वयायसर्गाधिपतयद्वयासनाय १

अनेकायवक्ररूपायधनाधिपतयकुम्भासनाय १

२०
१५
५
०
५
१०
१५
२०
२५
३०
सूक्तवायनमः ॥ उं ऊं षोणनायनमः ॥ उं अं अं नमः ॥ उं उं उं नमः ॥ उं सुग्रायनमः ॥ उं
महायनमः ॥ उं पातालायनमः ॥ ॐ ह्रीं दिग्गताकपालपूजा ॥ ॥ अथ वक्रावलीनपूजनं ॥ वक्रा
कृष्णसिका ॥ उं वक्रावलीनमः ॥ उं पुजापतयनमः ॥ वन्दनाकृतयक्षापवीतपूर्यनमः ॥ ॥ ७
लीनं ॥ उं विष्णुवनमः ॥ उं पुलीनायनमः ॥ वन्दनाकृतादि ॥ कुं उयादक्षिणसुवक्राग ॥ पूर्ववत्सू
जा ॥ स्मृति ॥ उं वक्रावलीनमः ॥ उं वक्रावलीनमः ॥ उं वक्रावलीनमः ॥ उं वक्रावलीनमः ॥ उं वक्रावलीनमः ॥
उक्तवत्सुलीनमः ॥ पूर्ववत्सूजा ॥ स्मृति ॥ उं यस्य हस्तगदायकुम्भमिति ॥ ॥ अथ शुक्लशुक्लाग्राधनं ॥ उं
ऊं अं अं अं ॥ लखनराय ॥ मंसपनं थयुकापून ॥ कृष्णनपूरनं चलसं चलनथियक ॥ उं
ऊं अं अं अं ॥ दधुसं दधुनथिय ॥ उं ऊं विद्यानत्वायनमः ॥ वानं वानं थिय ॥ उं

५
१०
१५
२०
२५
३०
ऊं निवन्त्वायनमः ॥ स्वीयालयनं शुक्लशुक्लाग्राधनं ॥ उं ऊं कवचायनमः ॥ धनशुक्लशुक्लाग्राधनं
लखनराय ॥ उं ऊं निवन्त्वायनमः ॥ स्वीयालयनं शुक्लशुक्लाग्राधनं ॥ उं ऊं कवचायनमः ॥ धनशुक्लशुक्लाग्राधनं
लीनमः ॥ लकाकुलसूय ॥ थवनजवत् कृष्णसुनयादगुवात ॥ मूलवत्सुलीनपूजनं ॥ उं ऊं ऊं
याथमि ॥ ॥ स्मृति ॥ उं शुक्लवत्सुलीनपूजनं ॥ शुक्लशुक्लाग्राधनं ॥ शुक्लशुक्लाग्राधनं ॥ शुक्लशुक्लाग्राधनं ॥
न ॥ अं अं अं ॥ ॥ अर्थस्वीतीग्राधनं ॥ उं ऊं अं अं ॥ लखनराय ॥ मंसपनं ॥ अर्थस्वीतीग्राधनं
लीनमः ॥ उं ऊं ऊं दयायनमः ॥ धनधनकनक ॥ धनरागकृष्णगुलि ॥ धनधनवन्त ॥ उं अं
यत्वा ॥ उं अं अं सामायत्वा ॥ उं अं अं सामायत्वा ॥ उं अं अं सामायत्वा ॥ उं अं अं सामायत्वा ॥
न ॥ धनमूर्तीदण्डयत् ॥ धनसकाखवकवाक् ॥ उं अं अं पायनं ॥ अं अं पायनं ॥ अं अं पायनं ॥

३

[illegible]

[illegible]

पाल १० ॥ वक्रादिमाहकागद ॥ पुयागभूक ॥ अणिनादुदि ॥ हंहुकादि १० ॥ कलश
 स्फुटिल ॥ घृतादुनिपू ॥ मूलमकुं ॥ गीसवर्कम ॥ ॥ अथरामपात्र ॥ अधनै ॥ ५४ अमु
 यरु ॥ लखनहाय ॥ मलयनस्ववल ३ ॥ ५४ अमुयरु ॥ लखनहाय ॥ रामपात्रसथना ॥ रा
 मल. मीको. अरुन. बीरुश. धव. इरु. पंवा. मरुनवाल. रमवसि. सिन्दूरकायन. जयमलि ॥
 मूलषउ. ननयुजा ॥ मयगीनजयवय. धार ३ ॥ यजमानआदिन. नमस्कार ॥ वाक् ॥ उंत्वम
 निगोस्वर्नमज ४. पावर्नपवमयक ४. नस्मात्स्वदीयस्यास्य. सस्कायनपयामि ॥ ॥ अथअ
 निदिदवता. आदिनघृतादुनिविकारुवियमाल. धार ३. राजपुधवारलेयथाउद्यानूसावली ॥ मूल
 मकुं ॥ गीसवर्कमिउयपू ॥ ॥ अथदशपादनविश. धवश्यादिगाया ॥ उंरु. कुव ४. स्व ४. स्वा

15

५१

मरुताय पा. पू. म्रुगन आदि।

10

५२

3

वनीदवीस्वर्गाकिस्रपनिवावसहिनायकवैवदवतायउरुवगीगीमहासमनाधिपतयगीगीउकास
 कमहाकजायउओगीरीषलमहातेववायगीवामुअपुनाम्वाकुंगरन्ध्रदकपाय॥उंअपुउला
 रुगन्ध्रदकायपाय॥अपुगन्ध्रदि॥॥मस्त्रसुना॥उंअगीवावलीपाय॥वन्दनसिन्दूरज
 उमस्त्रान॥उंअजांजीकांजांरुलेगामास्त्रकिनायकुंगीवावलीदवीस्वर्गाकिस्रपनिवावसहि
 नायमस्त्रमहासमनाधिपतयगीगीअष्टमहातेववअष्टदवीपवाम्वाकोसुनायपाय॥उं
 असर्वसम्यक्सुनायपाय॥वलि॥अपुगन्ध्रदि॥॥निर्घवकावायुजा॥घवकावायुनि॥उंउम
 नैर्वर्मायुखीयमथाधि विनागनीवावल्कीनसंयन्नीगन्ध्रदकायसिद्धय॥मस्त्रदुदायय
 दुर्घसर्वकामरुलपद॥॥घवकावायुमीसादुजियाय॥लाकन॥१०८॥गिरसनअमुदाकउ८सीका

ववतसिधवदहिउमउकादस्त्राननकुवक॥घवतत्रनासथनक॥मूलफउअनपुऊनी॥हाम
 उउसत॥॥२॥लार्लूगउकि॥लाकन॥४॥सगलसै॥४॥मूलसै॥मूलमनुजदाय॥ववखुनिदाय
 दादाय॥पिवखानदाय॥मूलमनुजी॥जवला॥जवस॥खवला॥खवस॥॥जव॥जवस॥खव॥खवस॥मया
 दातसलूगउदाय॥सिवाजाकाव॥खावकुसावकीन॥निर्वालेमनुप॥०८॥मूलमनुजलिवाङ्गति॥ग
 वास॥अहपुर्ण॥उंअदिग्दारीवेवसैसैगलवदकयुर्नयानिनीकुंउपाल॥सुलित्वासर्वदवास
 गलगलयुर्नमनुलीविन्दुवकी॥अष्टायुर्कवपुर्ण॥अलिवलिसहिर्नघवपात्तनियुर्क॥सु
 श॥८॥सर्वदवाकावलीमुखयुर्नपाहुकुङ्कुवनी॥८॥स्वाहा॥॥यवकावादि॥॥नैकास्त्रानवागवावी
 हिमूखिकदाय॥उउवि॥वन्दनउउ॥कालस॥कीध॥३॥न॥पकान्न॥यक्षोषधी॥समिध॥२॥मयस

नक्रवमु धविजा दाजा सभा मूकन मूलमनुदाय ॥ ॥ अथ भक्तिक योष्टिक विय ॥ मनु ॥
उंज ऊंऊंणी खन मरुते ववाय भक्तिय ॥ स्वाहा ॥ आरुति ३ ॥ उं सर्वदुवना लिह दुव ॥ स्वाहा
॥ पूरु ॥ उं उंज ऊं ऊं उं स मू म नी य मरुते वये योष्टिय ॥ स्वाहा ॥ आरुति ३ ॥ उं सर्वदुवना लि
ह दुव ॥ स्वाहा ॥ पूरु ॥ ॥ नभा दग वलि छिदव ३ अष्टमा रुका ८ अग्नितान्नादि ८ । पुयाग
दि ८ । हनुकादि १० । अऊवादि ५० । वनितीयागिनी वहु ४ वही । मरुवलि पुदाययत् ॥ आवा
य्यलयथा विधान नवलि पूजन ॥ विसर्जन विनयन मालनाकाय ॥ मालकाहाम ॥ उं स पूजका
नं पुनिपालकानी सामा यतत्तुतया धनानी । दग स्य मरु स्य पूरस्य मरु ४ कनी तु भक्ति रुगवा
न कलम ४ ॥ भक्ति वाक् पूष्टि वाक् नयाय ॥ पूजा वाक् पूजा याय आवाय्यत् दक्षिणा विय ॥ न

जायिता उदाय यगा रूति विय ॥ उं नृत्त ४ स्वाहा ॥ मारुत्त ४ स्वाहा ॥ गलत्त ४ स्वाहा ॥ यत्त ४ स्वा
हा ॥ पुत्त ४ स्वाहा ॥ अस्त ४ स्वाहा ॥ नक्रत्त ४ स्वाहा ॥ नालत्त ४ ॥ नक्रत्त ४ स्वाहा ॥ नालि
त्त ४ स्वाहा ॥ विष्टे गलत्त ४ स्वाहा ॥ कृत्त पालत्त ४ स्वाहा ॥ मनु वलि पुदानी ॥ पुत्त पूरु ॥ गाय
त्री गद्य ता रूति ३ ॥ तिला रूति ३ ॥ स्वकृत्त न ववा न यत्त ४ स्वाहा ॥ मूलमनुदाय पूरु ॥ गद्य हाम
॥ पुवा मू (धाम्नी) ॥ माल मूरव पुष्टि वदातया कृत्त याय ॥ मकार्थ ४ मनु ॥ अर्से सा सर्वथ व २ स
म ५ ॥ दव कलमादि अरुग धादि ॥ आवाय्य मूणी द्य ॥ अमृत्त कलमादिविसर्जनी ॥ यऊ
मान अलि गव ॥ वमु नन्दन सिन्दु व सगुणा गीर्वादि ॥ आवति पुतिष्टा ॥ वक्रा पुलीत मू
ल विसर्जनी ॥ वीरि मूष्टि ३ अग्नि मनुदाय ॥ ममृत्त अग्नि विसर्जनी ॥ हृदय न आमा

लीनं ॥ अथ यत्तु उदकं न कर्तुं शक्यं अग्निं कृत्वा यत्तु वनं कायाय ॥ पुलीनीय ॥ ॥ अथ कोमाव
पूजनं ॥ गणिकम् ॥ स यच्च कथाय यत्तु यत्तु शक्यं ॥ कर्तुं कथं पूजनं ॥ अथ सवाय ॥ ॥ अतिशय वाग्नि
क्षमस्तु यत्तु द्विष्टं समाय ॥ ॥ एवानीर्गकं लोतम् पूरुर्कं लिखितं मृदा ॥ एव वाग्निना मयर्कं वधं ॥ एव यत्तु द्दितिनि ॥